University in News on 22 January 2020

Amar Ujala-My City Page 5

लविवि में ईमेल पर जमा होगी थीसिस, स्काइप पर होगा वाइवा

कुलपति ने किया शोधार्थियों से संवाद, कहा-तकनीक के सहारे करेंगे समस्याओं का समाधान

माई सिटी रिपोर्टर

लखनऊ। लखनऊ विश्वविद्यालय तकनीक से कदमताल करके शोधार्थियों को कई सहूलियत देने की दिशा में काम कर रहा है। शोधार्थी अपनी थीसिस जंचवाने के लिए ईमेल के माध्यम से भेज सकेंगे। परीक्षक द्वारा हार्ड कॉपी मांगने पर ही उन्हें थीसिस का प्रिंटआउट लेकर जिल्दसाजी करानी होगी। इतना ही नहीं, समय की कमी की वजह से लविवि आने में असमर्थ शिक्षकों द्वारा पीएचडी वाइवा स्काइप के माध्यम से कराने की व्यवस्था लागू की जाएगी। लविवि कुलपति प्रो. आलोक कुमार राय ने मंगलवार को शोधार्थियों से संवाद करते हुए ये योजनाएं साझा कीं।

कुलपति ने विद्यार्थियों से संवाद करने की प्रक्रिया के पहले चरण में शोधार्थियों से बातचीत की। उन्होंने शोधार्थियों से कहा कि वे अपने पब्लिकेशन पर ध्यान दें। अच्छा पब्लिकेशन होने पर ही उन्हें नौकरी मिलेगी। विद्यार्थियों की समस्याओं के हल के लिए उन्होंने प्रशासनिक भवन में पीएचडी के लिए विशेष सेल तथा टैगोर पुस्तकालय में एक अलग स्थान निश्चित करने की बात भी कही। पीएचडी जमा करने के बाद उन्हें जल्द डिग्री अवार्ड हो सके इसकी व्यवस्था की जाएगी। विद्यार्थी बार-बार अपनी थीसिस का प्रिंटआउट निकालकर उसे बाइंड न कराएं। इसके बजाय वे ईमेल पर ही अपनी थीसिस जमा करें तथा मूल्यांकन के लिए भेजें। इससे कागज की बचत होगी तथा उनका खर्च भी कम होगा। सुझाव के तौर पर कुलपति ने कहा कि मूल्यांकन करने वाले शिक्षक एनआईआरएफ रैंक वाले संस्थानों के शिक्षक होने चाहिए। अगर संभव हो सके तो शोध अवधि के दौरान दो पेपर प्रकाशित करने की अनिवार्यता में यूजीसी के मान्य जर्नल को ही शामिल किया जाए। इसी तरह पीएचडी वाइवा स्काइप के माध्यम से आयोजित करने का प्रस्ताव भी कुलपति ने दिया। स्काइप से वाइवा होने की सूरत में भी पहले की तरह वीडियो रिकॉर्डिंग की व्यवस्था लागू रहेगी।

लविवि में शोधार्थियों से संवाद करते लविवि कुलपति प्रो. आलोक कुमार राय। अमर उजाला

वाइवा लेने वाले शिक्षकों के हों लेक्चर

कुलपति ने यह भी कहा कि जो शिक्षक पीएचडी वाइवा लेने आएं उनके लेक्चर भी आयोजित होने चाहिए। लविवि उन शिक्षकों से इसके लिए अनुरोध करे। वाइवा लेने वाले शिक्षकों के लेक्चर रिकॉर्ड करके विभाग अपने यू-ट्यूब चैनल पर भी डाल सकते हैं।

डिग्री अवार्ड होने में नहीं होनी चाहिए देरी

प्रो. राय ने कहा कि कई बार देखा जाता है कि थीसिस जमा करने के कई महीने यहां तक कि डेढ़-डेढ़ साल बाद उसे डिग्री अवार्ड होती है। ऐसा नहीं होना चाहिए। थीसिस जमा करने के बाद हर स्टेप के लिए अधिकतम समय निर्धारित किया जाएगा। अगर मूल्यांकन के लिए भेजी गई थीसिस पर जवाब नहीं आता है तो 30 दिन में उसे देखना चाहिए। 15 दिन का अतिरिक्त समय देने के बाद फिर उस पर आगे की कार्रवाई की जानी चाहिए।

सिर्फ हाजिरी लगाने के लिए आते हैं 15 किमी.

कुलपति संवाद के दौरान कुछ शोधार्थियों को समस्याएं रखने का मौका भी मिला। भूगोल विषय के शोधार्थी अनुपम शर्मा और उत्कल ने बताया कि उन्हें महाराजा बिजली पासी डिग्री कॉलेज में शोधार्थी आवंटित किए गए हैं। इसके बावजूद उन्हें हाजिरी लगाने के लिए रोजाना 15 किमी. दूर लविवि आना होता है। इस पर कुलपति ने कहा कि ऐसा नहीं होना चाहिए। इसकी व्यवस्था की जाएगी। शोधार्थियों ने प्रयोगशाला में उपकरण तथा रसायनों की कमी की बात भी कही। छात्राओं ने परिसर में गंदगी तथा पीने के पानी का मुद्दा उठाया। इसी तरह छात्र गणेश शंकर पांडेय ने शोध के पर्याप्त डाटा न मिलने की बात कही।

आज परास्नातक छात्रों से संवाद

लखनऊ विश्वविद्यालय में विद्यार्थियों से संवाद की कड़ी में बुधवार को कुलपति परास्नातक विद्यार्थियों से बातचीत करेंगे। इस दौरान वे अपनी योजनाएं बताएंगे और समस्याएं भी पूछेंगे। इस दौरान अधिष्ठाता छात्र कल्याण प्रो. पूनम टंडन भी उपस्थित रहेंगी।

Dainik Jagran Page 6

लविवि कराएगा पार्ट टाइम पीएचडी, बनेगा स्पेशल सेल

शोध छात्रों से संवाद के दौरान **बोले कुलपति** समयबद्ध होगी पीएचडी

जागरण संवाददाता, लखनऊ : लखनऊ विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. आलोक कुमार राय मंगलवार को शोध छात्रों से मुखातिब हुए। छात्र संवाद कार्यक्रम की कड़ी के पहले दिन विवि के पांच सौ से ज्यादा शोधार्थी कुलपति से मिले और अपनी समस्याओं को साझा किए।

लखनऊ विश्वविद्यालय के मालवीय सभागार में आयोजित संवाद कार्यक्रम में वीसी ने शोध की प्रक्रिया में बड़े बदलाव किए जाने के संकेत दिए। उन्होंने कहा कि विश्वविद्यालय अनुदान आयोग ने पार्ट टाइम पीएचडी की व्यवस्था कर रखी है। लविवि प्रशासन इस पर जल्द फैसला लेगा। वहां शोधार्थियों को कोर्स वर्क की कक्षाओं से छूट दी जाती है, मगर परीक्षा भी देनी पड़ती है। इसके अलावा इन्हें अतिरिक्त समय दिया जाता है।

उन्होंने विश्वविद्यालय में एक पीएचडी सेल बनाने की जरूरत बताई। इसके अलावा, थीसिस जमा करने से लेकर पीएचडी अवॉर्ड होने तक की प्रक्रिया को समय पर कराए जाने का भी प्रस्ताव रखा। उन्होंने कहा कि पीएचडी की मौखिक परीक्षा स्काइप के माध्यम से भी कराई जा सकती है। इसके अलावा पीएचडी थीसिस की सॉफ्ट कॉपी लाइब्रेरी में जमा किए जाने की व्यवस्था शुरू करने के निर्देश दिए। उन्होंने कहा कि शोध कार्य की गुणवत्ता बढ़ाने के लिए शोध छात्रों के लिए कार्यशाला एवं व्याख्यान का आयोजन किया जाएगा।

लगातार बढ़ाई जा रही फीस: रसायन विज्ञान के शोधार्थी ने कहा वर्ष 2016 में प्रवेश की फीस करीब 7,200 रुपये थी। उसके पहले वाले दाखिलों पर यह 5,200 रुपये। फीस लगातार बढ़ाई जा रही है, मगर संसाधन नहीं मुहैया कराए जा रहे हैं। शोध के लिए जरूरी केमिकल और अन्य संसाधन लैब में उपलब्ध नहीं हैं।

लखनऊ विश्वविद्यालय के मालवीय सभागार में कुलपति-छात्र संवाद के पहले दिन शोध छात्रों को संबोधित करते कुलपति प्रो. आलोक कुमार राय • फोटो सौजन्य: लविवि

हाजिरी लविवि में, गाइड मिला 15 किलोमीटर दूर

संवाद के दौरान लविवि के भूगोल विभाग में शोध छात्र ने कुलपति से कहा कि मैं भूगोल विषय में शोध कर रहा हूं। रोजाना मुझे पहले लखनऊ विश्वविद्यालय में आकर उपस्थिति दर्ज करानी पड़ती है। इसके बाद 15 किलोमीटर दूर महाराजा बिजली पासी महाविद्यालय में गाइड के पास जाना पड़ता है। कुल 30 किलोमीटर रोजाना आना-जाना पड़ता है।

विशेषज्ञ देंगे जानकारी

लखनऊ : इंडस्ट्री को कैसे विद्यार्थियों की डिमांड है, किस क्षेत्र में रोजगार की संभावनाएं अधिक हैं। 25 जनवरी को अंतरराष्ट्रीय एचआर एक्सपर्ट व कारपोरेट ट्रेनर अजय अग्रवाल लविवि के डिपार्टमेंट ऑफ बिजनेस एडमिनिस्ट्रेशन में एमबीए छात्रों को लेक्चर देंगे। (जासं)

Hindustan Page 7

विश्वविद्यालय कराएगा पार्ट टाइम पीएचडी

छात्र बोले: उपस्थिति एलयू में और गाइड 15 किमी दूर कॉलेज में मिला

लखनऊ विश्वविद्यालय के मालवीय सभागार में मंगलवार को छात्र संवाद कार्यक्रम का आयोजन किया गया • हिन्दुस्तान

लखनऊ विवि

लखनऊ | वरिष्ठ संवाददाता

लखनऊ विश्वविद्यालय प्रशासन, शिक्षक और डिग्री कॉलेज के प्राचार्यों के बाद अब कुलपति प्रो. आलोक कुमार राय से मिलने की बारी छात्रों की है। इसकी शुरुआत मंगलवार को शोधार्थियों के साथ की गई।

छात्र संवाद कार्यक्रम के पहले दिन 500 से ज्यादा शोधार्थी नए कुलपति से मिलने और अपनी बात रखने पहुंचे। लखनऊ विश्वविद्यालय के मालवीय सभागार में हुई इस संवाद में कुलपति प्रो. आलोक कुमार राय ने शोध की प्रक्रिया में बड़े बदलावों की रूपरेखा तैयार की।

कुलपति प्रो. आलोक कुमार राय

नौकरी करने वालों को मौका, समयबद्ध होगी पीएचडी : कुलपति प्रो. आलोक कुमार राय ने बताया कि विश्वविद्यालय अनुदान आयोग ने पार्ट टाइम पीएचडी की व्यवस्था कर रखी है। इस पर फैसला विश्वविद्यालय को लेना होता है। यहां शोधार्थियों को कोर्स वर्क की कक्षाओं से छूट दी जाती है। परीक्षा फिर भी देनी पड़ती है। इसके अलावा, इन्हें कुछ अतिरिक्त समय दिया जाता है। इसे लागू करने की संभावनाएं तलाशी जा रही हैं। उन्होंने विश्वविद्यालय में एक पीएचडी सेल बनाने का भी प्रस्ताव रखा। इसके अलावा, थीसिस जमा करने से लेकर पीएचडी अवार्ड होने तक की प्रक्रिया को समयबद्ध करने का भी प्रस्ताव रखा गया। कुलपति ने कहा कि पीएचडी की मौखिकी परीक्षा स्काइप के माध्यम से कराने का सुझाव दिया। पीएचडी थीसिस की सॉफ्टकॉपी लाइब्रेरी में देने की व्यवस्था शुरू करने की बात कही। कुलपति ने कहा कि शोध कार्य की गुणवत्ता बढ़ाने के लिए शोध छात्रों के लिए समय-समय पर विभिन्न कार्यशाला एवं व्याख्यानों का आयोजन किया जाएगा। इस दौरान उन्होंने इंस्टीट्यूट ऑफ मैनेजमेंट साइंसेज में प्रस्तावित सॉफ्टवेयर प्रशिक्षण कार्यक्रम की काफी प्रशंसा की।

लखनऊ | वरिष्ठ संवाददाता

कुलपति महोदय, मैं भूगोल विषय का शोधार्थी हूं। प्रतिदिन मुझे पहले लखनऊ विश्वविद्यालय में आकर उपस्थिति दर्ज करानी होती है। उसके बाद 15 किलोमीटर दूर महाराजा बिजली पासी महाविद्यालय में गाइड के पास जाता हूं।

प्रतिदिन 30 किलोमीटर की जबरन दौड़ लगानी पड़ती है। यह दर्द है लखनऊ विश्वविद्यालय के भूगोल विभाग में शोध कर रहे अनुपम और उसके जैसे दूसरे शोधार्थियों का। कुलपति-शोधार्थी संवाद के दौरान मंगलवार को कुलपति प्रो. आलोक कुमार राय के सामने यह मुद्दा रखा गया। करीब 5 शोधार्थियों ने अपनी शिकायतों को इस मंच पर उठाया।

फीस बढ़ी, पर आवश्यक सुविधाएं नहीं मिली

केमेस्ट्री के शोधार्थी इंद्रेश ने फीस का मुद्दा उठाया। कहा कि वर्ष 2016 में प्रवेश पर उनकी फीस करीब 7,200 रुपये थी। उसके पहले वाले दाखिलों पर यह 5,200 रुपये रही। फीस लगातार बढ़ाकर ली जा रही है। जबकि, संसाधनों की स्थिति बेहद खराब है। शोध के लिए आवश्यक केमिकल और दूसरे संसाधन तक लैब में नहीं मिलते हैं।

समोसे में उलझे तो बजी तालियां

संवाद में समोसे पर जमकर चर्चा हुई। असल में, एक शोधार्थी ने खाने पीने और आवास में हो रही समस्याओं पर बोलना शुरू किया। शोधार्थी बोला, 'खाने का कोई अता पता भी नहीं होता। पैसा है नहीं। कैंटीन का समोसा खाकर जी रहे हैं। समोसा भी 10 रुपये का मिल रहा है। इसे भी कम कराया जाए।

सांख्यिकी विभाग की ओर से मिले मदद

शारीरिक शिक्षा विभाग के शोधार्थी गणेश शंकर पाण्डे ने शोध कार्यों में सांख्यिकी विभाग की आवश्यकता और सहयोग न मिलने की बात को उठाया। कहा कि शोध कार्यों में सांख्यिकी की जरूरत काफी होती है। लेकिन, कोई व्यवस्था नहीं है कि विश्वविद्यालय का सांख्यिकी विभाग इसमें किसी तरह की मदद दे सके। वहीं, एक शोधार्थी की ओर से संसाधनों को केन्द्रीयकृत किए जाने का सुझाव भी रखा गया। इससे एक विभाग में उपलब्ध संसाधनों का इस्तेमाल दूसरे विभाग के शोधार्थी भी कर सकेंगे।

20 सदस्यीय मेस संचालन समिति गठित

लखनऊ विश्वविद्यालय में मंगलवार को सेंट्रल मेस संचालन एवं मॉनीटरिंग के लिए एक समिति का गठन किया गया। भौतिक विज्ञान विभाग के प्रो. एनके पांडेय को अध्यक्ष बनाया गया। इस 20 सदस्यीय समिति में डॉ. राजेंद्र कुमार वर्मा, डॉ. आनंद बल्लभ जोशी, डॉ. राजेश्वर प्रसाद यादव, डॉ. एसके दत्त, डॉ. एनके सिंह, डॉ. संजीव किशोर गौतम को बतौर सदस्य शामिल किया गया है। वहीं, छात्र सदस्यों में शुभम मिश्रा, आशुतोष राय, अभिषेक शुक्ला, रुद्र प्रताप, परमजीत सिंह, आदित्य कुमार मिश्रा, धर्मेंद्र मौर्या, आदित्य राज, सौरभ चौबे, विवेक जायसवाल, नितिन कुमार और अक्षय कुमार शामिल हैं।